मेरे हसबैण्ड की प्रेमिका

साथ में 2 अन्य कहानियाँ

रात का निमंत्रण • द लास्ट डे



अमित खान

मेरे हसबैण्ड की प्रेमिका

साथ में 2 अन्य कहानियाँ

रात का निमंत्रण • द लास्ट डे



अमित खान

3 कहानियों का संकलन

मेरे हसबैंड की प्रेमिका __ अमित खान



की गौरवशाली भेंट

लेखकीय

प्रिय पाठकों,

आओ, आज कुछ दिल की बातें करें दोस्तों। मोदी जी ने 19 दिन का लॉकडाउन और बढ़ा दिया है। यह सही भी है। हालाँकि जो गरीब, मज़दूर लोग हैं, उनकी परेशानियां भी अपनी जगह हैं। लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि जान है तो जहान है। बहरहाल आप जहाँ रहें, अच्छे से रहें। न सिर्फ अपना, अपने परिवार का बल्कि अपने पड़ोसियों का भी ध्यान रखें कि कहीं कोई मजबूर आदमी तो नहीं है।

इन परिस्थितियों में हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी बड़ी हो जाती है। हमें इन हालातों में दिमाग से नही दिल से सोचने की जरूरत है। हालांकि इससे बड़ी बेवकूफी की लाइन कुछ नहीं। दिल भी भला कहीं सोचता है? लेकिन एक बात कहूँ, जरा गौर से सुनना, यह कमबख्त दिल ही तो है, जो सोचता है और बड़ा सही सोचता है। आजकल मैं भी बहुत ज़्यादा दिल से सोच रहा हूँ। यह अकेलापन, यह तन्हाई बहुत ज़्यादा दिल से सोचने पर मजबूर करती है।

इंसान टी-बैग की तरह होता है, वो अपने आपमें कितना स्ट्रांग है; उसे खुद तब तक पता नही चलता, जब तक वो अपने आपको गरम पानी में नहीं डालता। मुश्किलों में नहीं डालता। यह मुश्किल का ही वक़्त है और अपने आपकी परीक्षा लेने का भी; कि आप कितने स्ट्रॉन्ग हैं। मैं भी आजकल काफी लेखन कर रहा हूँ। इस लॉकडाउन में एक नई कहानी लिखी है- द लास्ट डे!
किंडल पर 3 कहानियों का एक संकलन निकाल रहा हूँ, आप पढ़ें और बतायें कि सभी कहानियाँ आपको कैसी लगीं। खासतौर पर "द लास्ट डे" के बारे में आपकी राय जानने के लिये ज़्यादा उत्सुक हूँ। अपनी राय अमेज़ॉन पर रिव्यू लिखकर अवगत करायें।

लिंक नीचे दिया गया है।

घर पर रहें। सुरक्षित रहें और सबका ध्यान रखें। सबका मतलब सबका। जहाँ तक आपसे संभव हो।

आपका अपना
अमित खान
मुंबई- 400104

सम्पर्क सूत्र: foramitkhan@gmail.com

मेरे हसबैंड की प्रेमिका

अगर शादी के बाद किसी वाइफ को पता चल जाये कि उसके हसबैंड का कोई अफेयर चल रहा है, तो वह कोहराम मचा देगी । लेकिन यह "विधि" नामक एक ऐसी वाइफ की कहानी है, जिसे जब अपने हसबैंड की एक्स-गर्लफ्रेंड का पता चला, तो वह उन दोनों को एक-दूसरे से मिलाने के लिये बैचेन होने लगी ।
आपको शायद यह सब मज़ाक लग रहा होगा, लेकिन यही सच है ।

हसबैंड-वाइफ के रिश्ते पर "अमित खान" द्वारा लिखी गयी एक बेहद अरबन, न्यू ऐज लव स्टोरी ।

1



मेरे हसबैंड की प्रेमिका

इ स कहानी में सिर्फ ३ कैरेक्टर हैं- मैं यानि वाइफ, मेरे हसबैंड और उनकी प्रेमिका । कैरेक्टर सुनकर ही आपको अंदाज़ा हो रहा होगा कि यह कितनी मजेदार कहानी है । खासतौर पर ऐसी लव स्टोरी आपने न पढ़ी होगी और न सुनी होगी- जब एक वाइफ अपने हसबैंड की प्रेमिका का किस्सा सुनाने जा रही है ।

वो भी फुल रोमांटिक और पॉजिटिव अंदाज़ में ।

सबसे पहले मैं यानि वाइफ आपको अपना इंट्रोडक्शन देती हूँ- मेरा नाम "विधि" है । इस कहानी में दूसरे अहम् कैरेक्टर यानि मेरे हसबैंड का नाम "देव" है और कहानी के तीसरे पर सबसे ख़ास कैरेक्टर, जिसकी वजह से कहानी में तमाम ट्विस्ट-टर्न आये, जिसकी वजह से इस कहानी का जन्म हुआ- वो एक प्रेमिका है, जिसके कैरेक्टर के ऊपर से आगे पर्दा उठेगा ।

कहानी की शुरुआत देव से करते हैं । देव से मेरी शादी को अभी सिर्फ १ साल हुआ है । हमारी अरेंज मैरिज है । मैं बनारस से हूँ, देव मेरठ से । वह मेरठ की चौधरी चरणसिंह यूनिवर्सिटी में मेथ के प्रोफ़ेसर हैं । देव के और मेरे फादर आपस में बड़े गहरे दोस्त हैं । सच तो यह है कि देव के फादर को मैं बचपन से पसंद थी और वो कई साल से चाहते थे कि मेरी और देव की शादी हो । देव सुन्दर भी थे और होनहार भी । इसलिए शादी में किसी तरह की न कोई प्रॉब्लम होनी थी, न हुई ।

सच तो यह है कि शादी के बाद देव ने मुझे जितना प्यार दिया, मैं निहाल हो गयी । मुझे लगा ही नहीं कि वो अरेंज मैरिज है । सब कुछ लव मैरिज जैसा था । हम हनीमून के लिए उत्तराखण्ड की पहाड़ियों में गए और वहां हमने खूब एन्जॉय किया । देव प्रोफेसर जरूर

"मेथ" के थे, लेकिन मेथ की तरह बोरिंग बिलकुल नहीं थे बल्कि वह तो हमेशा जोक्स सुना-सुनाकर हंसाते रहते थे । मुझे कई बार सरप्राइज होता था कि उन जैसे कलरफुल व्यक्ति ने मेथ जैसा बोरिंग सब्जेक्ट क्यों चुना ?

अब कहानी के सबसे बड़े टर्निंग पॉइंट की तरफ आते हैं ।

देव जो हमेशा बहुत खुश-खुश नज़र आते थे । एक दिन मुझे उनकी ख़ुशी के पीछे छुपे दर्द का पता चला । सब कुछ बहुत चौंका देने वाला था ।

देव के कॉलेज में एनुअल फंक्शन था । उसी फंक्शन में मेरी साँची नाम की एक लड़की से मुलाकात हुई । साँची, देव की स्टूडेंट थी । साँची के साथ बातचीत में ही मुझे पता चला कि उस कॉलेज में इंग्लिश की एक प्रोफेसर थी- रोशेल! रोशेल सांस्कृतिक विभाग की अध्यक्ष भी थी और कॉलेज में जितनी कल्चरल एक्टिविटीज़ होती थीं, सब रोशेल ही हैंडल करती थी । इतना ही नहीं, कॉलेज के हर एनुअल फंक्शन में रोशेल गिटार बजाती थी और देव गाते थे ।

मैं चौंक गयी ।

देव जोक्स बहुत अच्छे सुनाते हैं, मैं जानती थी । लेकिन वो गाते भी अच्छा हैं, मुझे नहीं मालूम था । मैंने कभी उन्हें गाते नहीं सुना था । बाथरूम सिंगर के तौर पर भी नहीं ।

मैंने जब इंग्लिश की उस प्रोफेसर रोशेल के बारे में साँची से कुछ और जानना चाहा, तो साँची थोडा अनइजी हो गयी । मुझे साफ़ महसूस हुआ, जैसे साँची मुझसे कुछ छुपा रही है । बहुत पूछने पर साँची सिर्फ इतना बोली कि जबसे रोशेल कॉलेज छोड़कर गयी थी, तबसे प्रोफेसर ने कभी किसी फंक्शन में गाना नहीं गाया था ।

मेरी बेचैनी बढ़ गयी ।

मुझे खतरे की गंध आने लगी थी ।

अगले दिन ही मैंने साँची को घर बुलाया । साँची मेरा सामना करते हुए अनइजी थी । शायद वो भी मेरे मन में चल रहे विचारों को भाँप गयी थी । देव घर पर नहीं थे । मैंने साँची के लिए कॉफी बनाई और फिर उसके साथ बातचीत का सिलसिला शुरू किया । जल्द ही साँची खुल गयी । उसने प्रोफेसर को कुछ भी न बताने की कसम लेकर मुझे जो बताया, वह चौंका देने वाला था ।

दरअसल देव और रोशेल एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे । उनकी लव स्टोरी पूरे कॉलेज में फेमस थी । कॉलेज के सब स्टूडेंट तो उनके प्यार के किस्से बड़े चटखारे ले-लेकर बयान करते थे । वह दोनों कॉलेज में "लव बर्ड" के नाम से मशहूर थे ।

"फिर उन दोनों ने शादी क्यों नहीं की?" मैंने बेचैनी से पूछा ।

"ज्यादा तो मैं नहीं जानती, बस कॉलेज में यह अफ़वाह थी ।" साँची थोडा हिचकिचाते हुए बोली- "कि प्रोफ़ेसर साहब के फादर ने उनका रिश्ता आपके साथ जो पक्का कर दिया था- यही वजह रही, उस सम्बंध के टूटने की । प्रोफेसर साहब अपने फादर की बहुत

रेस्पेक्ट करते थे, इसलिए उन्होंने कभी उन्हें भी रोशेल के बारे में नहीं बताया । बस उसके बाद रोशेल मेम कॉलेज छोड़कर चली गयी थीं ।''

''अब कहाँ हैं रोशेल?''

''वह नोयडा के प्रियदर्शिनी कॉलेज में शिफ्ट हो गयी थीं । लेकिन उन दोनों के प्यार के टूटने से पूरा कॉलेज दुखी था ।''

मैं सन्न रह गयी ।

देव सचमुच बहुत अच्छे इंसान थे । उन्होंने मुझे कभी इस बात का एहसास तक नहीं होने दिया था कि वह कभी किसी और से प्यार करते थे । रोशेल को पूरी तरह भुलाकर उन्होंने मुझसे सच्चा प्यार किया ।

एकाएक मैं खुद को अपराधी महसूस करने लगी, जो उन दोनों के प्यार के बीच में आ गयी थी ।

शाम को देव आये । वो हमेशा की तरह बड़े खुश थे । मेरे लिए वो नई साड़ी लाये थे । आते ही उन्होंने मुझे हग किया । फिर फ़ौरन मुझे वो नई साड़ी पहनकर दिखाने को कहा । मुझे जोक्स भी सुनाये ।

उनमें कुछ नहीं बदला था । पर शायद मेरे अन्दर ही कुछ बदल गया था ।

उस रात मैं सो न सकी । मुझे ऐसा लग रहा था- जैसे वो प्यार रोशेल का था, जिसे मैंने छीन लिया था ।

काश मैं साँची से न मिली होती । काश मैंने उससे वह सब कुछ नहीं पूछा होता ।

मेरा एकाएक रोशेल से मिलने का मन करने लगा ।

अगले दिन मैं फिर साँची से मिली और मैंने उससे कहा कि मैं नोयडा जाकर एक बार रोशेल से मिलना चाहती हूँ ।

साँची ने मुझसे मना किया कि मुझे यह सब नहीं करना चाहिए । लेकिन मैं भला अब उसकी कोई बात कहाँ सुनने वाली थी । मैंने साँची को अपने साथ नोयडा चलने के लिए तैयार कर ही लिया ।

२ दिन बाद ही हम नोयडा में थे । मैंने देव से बहाना बनाया कि मेरी एक फ्रेंड की बर्थ-डे पार्टी है । मैं पूरा दिन उसी में व्यस्त हूँ । देव ने मुझसे कोई पूछताछ न की । सुबह ही मैं और साँची नोयडा के लिए निकल गए । मेरठ से नोयडा की दूरी कोई ३ घंटे की है । नोयडा में हम सीधे ''प्रियदर्शिनी कॉलेज'' पहुँचे ।

साँची ने भी रोशेल को जल्दी ढूँढ निकाला । वह तभी अपना लेक्चर फ़िनिश करके स्टाफ रूम में आई थी ।

मैंने रोशेल को देखा, तो बस देखती रह गयी ।

सच में वो बहुत ख़ूबसूरत थी । उसने केप शर्ट और लाइट ब्लू कलर की नेरो जिन्स पहन रखी थी । बालों की हाई पोनी बांधी हुई थी और साइड फ़िलिक्स निकली थी । वह बात

करते-करते बीच-बीच में हंसती थी, तो उसकी साइड फ़िलिक्स उसके गालों को छू जाती ।

साँची को देखते ही वो पहचान गयी और उससे बड़ी गरमजोशी के साथ मिली । आखिर साँची ने २ साल इंग्लिश रोशेल से पढ़ी थी । साँची से मिलते ही रोशेल ने पूछा कि उसकी पढाई कैसी चल रही है ?

उसके बाद साँची ने रोशेल से मेरा इंट्रोडक्शन भी कराया । साँची ने बताया- मैं प्रोफ़ेसर की वाइफ विधि हूँ । यह नोयडा किसी पर्सनल काम से आई थीं, तो मेरे साथ यूनिवर्सिटी भी आ गयीं ।

देव की वाइफ !

सुनते ही चौंकी रोशेल !

उसने अब बड़े अलग तरह से मेरी तरफ देखा । कुछ सेकिंड के लिए रोशेल की नज़रें मेरे चेहरे पर ही फ्रीज़ होकर रह गयी थीं ।

“मैंने साँची से आपकी बहुत तारीफ़ सुनी थी ।” मैंने ही उस मौन को तोड़ा- “इसलिए आपसे मिलने से खुद को रोक नहीं पायी ।”

“ऐसी कोई बात नहीं ।” वह मुस्कुराई, लेकिन उसकी मुस्कराहट छनी हुई थी- “तारीफ़ के लायक तो आप हैं ।”

मैं कुछ न बोली ।

लेकिन उसके बाद हम दोनों के बीच बातचीत का ज़बरदस्त सिलसिला शुरू हो गया । बात करते-करते बीच-बीच में उसके बालों की फ़िलिक्स उसके चेहरे पर आ जाती, तो वह और खूबसूरत लगने लगती ।

वह जैसे भूल गयी थी कि मेरे साथ साँची भी है ।

जल्द ही हम दोनों अच्छे दोस्त बन गए ।

रोशेल फ़ौरन मुझे और साँची को अपने घर ले गयी और हमें लंच कराया ।

घर बहुत साफ़-सुथरा और करीने से सज़ा हुआ था । घर की दरों-दीवार और कर्टंस के कलर रोशेल के क्लासिक टेस्ट को बयान कर रहे थे ।

तब तक शायद उसे यह मालूम नहीं था कि मैं उसके और देव के प्रेम-प्रसंग के बारे में कुछ जानती हूँ ।

हम दोनों तो आपस में यूँ घुल-मिल गए थे, जैसे बचपन की बिछड़ी २ सहेलियाँ हों ।

मैं जब उसके घर से विदा हुई, तो मैंने उसे भी मेरठ आने का इनविटेशन दिया । वैसे भी २ दिन बाद मेरी फर्स्ट मैरिज एनिवर्सरी थी ।

मेरठ आने के नाम वह फिर थोडा अनइजी हो गयी । लेकिन जब मैंने उसे प्रेशर दिया, तो वह मान गयी ।

साँची इस बीच चुपचाप हम दोनों को देख रही थी ।

जब हम नोयडा से वापस मेरठ लौट रहे थे, तब साँची ने मुझसे थोडा हिचकिचाते हुए कहा- "मेम, यह आप ठीक नहीं कर रही हैं ।"

"क्या ?"

"यही, रोशेल मेम को अपने घर बुलाकर । प्रोफ़ेसर और रोशेल मेम जब इतने टाइम बाद फिर आपस में मिलेंगे, तो... !"

"हूँ... मैं सब समझती हूँ ।" मेरी आवाज़ में गंभीरता थी- "सच कहूँ साँची, जबसे मुझे यह बात पता चली है- मुझे लग रहा है कि जैसे मैं अपराधी हूँ । मेरी वजह से ही देव और रोशेल अलग हुए । वह दोनों ही कितने अच्छे हैं । अगर उन दोनों की शादी हुई होती, तो वह कितने खुश रहते ।"

"यह... यह आप क्या कह रही हैं मेम?" साँची बुरी तरह चौंक गयी- "कहीं... कहीं आप उन दोनों को मिलाने के बारे में तो नहीं सोच रही हैं?"

"अगर वह दोनों मिल गए ।" मैं खोये-खोये अंदाज़ में बोली- "तो सबसे अच्छा मुझे लगेगा साँची ।"

"मेम !" साँची की हैरानी से चीख़ निकल गयी- "आप भूल रही हैं, आपकी प्रोफ़ेसर से शादी हो चुकी है । आप पत्नी हैं उनकी ।"

"पत्नी हूँ, इसीलिए यह बात कह रही हूँ । पत्नी का अर्थ है- अर्धांगिनी ! पति के सुख-दुःख में आधे-आधे की साथी । पत्नी का मतलब यह नहीं कि वह अपने पति को सिर्फ अपने पल्लू से बांधकर रखे । पत्नी का मतलब यह भी है कि वह पति के सुख का ध्यान रखे । और इसमें हर्ज़ ही क्या है ? ऐसे कितने परिवार हैं- जहाँ एक ही घर में एक आदमी के साथ २ पत्नियाँ रहती हैं और रोशेल से मिलकर मुझे पूरा भरोसा हो गया है कि हम दोनों एक घर में २ अच्छी बहनों की तरह रह सकती हैं ।"

"मेम !" साँची को अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था- "मुझे उम्मीद नहीं थी कि आप अपने हाथों से अपने हँसते-खेलते परिवार को तबाह करेंगी । इससे तो अच्छा होता कि मैं इस बारे में आपको कुछ बताती ही नहीं ।"

"ऐसी बात नहीं साँची ।" मैं साँची की तरफ देखकर मुस्कुराई- "तुम सच में एक अच्छी लड़की हो । केयर करने वाली । लेकिन मुझे मेरे एक सवाल का जवाब दो- तुम्हारे प्रोफ़ेसर ने मुझे आज तक हर ख़ुशी दी । मुझसे उतना ही प्यार किया, जितना वह शायद रोशेल से करते । मुझे कभी इस बात का एहसास तक नहीं होने दिया कि उनकी ज़िन्दगी में कोई और लड़की भी थी । उन्होंने अपने पति होने का फ़र्ज़ पूरी तरह निभाया । लेकिन आज जब मुझे पता चला है कि उनकी ज़िन्दगी में कोई और लड़की थी, तो तुम्ही बताओ- एक पत्नी होने के नाते मेरा क्या फ़र्ज़ है ? मैं अपनी माँग में जो सिन्दूर भर रही हूँ, गले में जो मंगलसूत्र पहन रही हूँ- उस पर किसी और का पहला हक़ था । तो क्या एक अच्छी पत्नी होने के नाते मेरा फ़र्ज़ नहीं कि मैं अपने पति को उस लड़की से मिलाऊं ?"

साँची मेरी बात सुनकर निरुत्तर हो गयी ।

शायद मैं जिस तरह की बात कर रही थी, वह बात कोई साधारण लड़की नहीं कर सकती थी । इसीलिए वह चौंक रही थी ।

उसके बाद मेरे जीवन के अगले कुछ दिन बहुत चौंका देने वाले थे ।

रोशेल मेरे इनविटेशन पर घर आई थी ।

हमारी मैरिज एनिवर्सरी के उपलक्ष्य में वह फूलों का एक बड़ा सुन्दर बुके भी लायी । रोशेल को सडनली अपने घर पर देखकर देव चौंका । मैंने देव को बताया- साँची के जरिये हम दोनों की मुलाकात हुई थी और हम पहली ही मुलाकात में बड़े अच्छे दोस्त बन गए हैं ।

रोशेल कोई एक घंटा घर पर रही और वह सारे समय बस मुझसे ही बात करती रही । देव की तरफ उसने निगाह उठाकर भी नहीं देखा । बस उन दोनों के बीच नॉर्मल हाय-हेलो हुई । जैसे वह एक-दूसरे को पहचानते ही नहीं थे ।

उसके बाद रोशेल चली गयी ।

फिर कुछ दिन बाद मैं देव को बहाने से नोयडा ले गयी । मैं उन दोनों को मिलाने के अब अक्सर बहाने खोजती रहती थी । उन दोनों को पता ही नहीं था कि मेरे मन में क्या चल रहा है ।

रोशेल के बर्थडे पर भी हम मिले । मैंने देव से कुछ गुनगुनाने का आग्रह किया, तो रोशेल भी खुद को गिटार बजाने से रोक नहीं पायी । वह शाम यादगार थी । अब वह दोनों एक-दूसरे से हल्की-फुल्की बात भी कर लिया करते थे । लेकिन फिर भी उन दोनों के बीच एक अनदेखा, अनकहा-सा फ़ासला था ।

कहते हैं- प्यार एक आग का दरिया होता है और मैं उस आग को हवा दे रही थी ।

देव के प्यार ने मेरे अन्दर एक अज़ीब-सा हौंसला भर दिया था ।

मुझे किसी बात का डर ही न रहा था । मैं तो इतना चाहती थी कि बस देव खुश रहे ।

लेकिन मेरी चालाकी ज्यादा दिन तक चली नहीं । जल्द ही देव को पता चल गया कि मुझे उसके और रोशेल के प्यार के बारे में सब कुछ मालूम है ।

फिर तो सारी परिस्थितियां बड़ी तेज़ी से बदलीं ।

मेरे लिए सबसे बड़ा झटका था, जब एकाएक रोशेल गायब हो गयी । उसका मुझे एक लैटर मिला । बहुत संक्षिप्त-सा लैटर था ।

रोशेल ने लिखा था-

विधि,

तुमसे मिली, बहुत अच्छा लगा । मुझे लगता था कि देव का और मेरा प्यार अदभुत है । लेकिन गलत थी मैं । तुमसे मिलकर लगा कि देव सचमुच बहुत सौभाग्यशाली हैं, जो उन्हें तुम्हारे जैसी पत्नी मिली । तुमने मुझे और देव को मिलाने की जो कोशिश की, वह शायद

ही दूसरी कोई पत्नी कर पाती । मैं भी नहीं । इसी से साबित होता है कि देव की खुशियाँ तुम्हारे लिए कितना मायने रखती हैं । देव के साथ तुम बहुत खुश रहोगी और देव तुम्हारे साथ । मैं नोयडा से दूर कहीं जा रही हूँ । कहाँ ? मुझे खुद नहीं मालूम । मुझे तलाशने की भी कोशिश मत करना । पहले सिर्फ देव की यादें थी, अब तुम्हारी भी यादें हैं- मैं उन यादों के सहारे ज़िन्दगी गुजार लूँगी ।

तुम्हारी रोशेल

उस पत्र को पढ़ते-पढ़ते मेरी आँखों में आँसू आ गये ।

देव ने भी वह पत्र पढ़ा, वो भी भावुक हो उठा ।

फिर हम दोनों ने रोशेल को सब जगह तलाशने की कोशिश की, लेकिन रोशेल हमें कहीं नहीं मिली ।

आज इस वाक्ये को कई साल बीत चुके हैं । देव की और मेरी अब एक बेटी भी है ।

रोशेल तो फिर हमें कभी नहीं मिली, लेकिन उसकी यादें आज भी हमारे साथ हैं ।

रोशेल आज भी हमारे परिवार का एक हिस्सा है ।

उसका प्यार मेरे और देव के साथ-साथ है ।

***

रात का निमंत्रण

एक ऐसे आर्मी अफसर की प्रेम कहानी, जो अपने अनुशासित जीवन से तंग आ चुका था । एक बेहद खूबसूरत राजपूत औरत से उसकी शादी हुई । यह उसका पहला प्यार था । शादी के बाद अपनी पत्नी से उसने प्यार किया । फिर उसकी जिन्दगी में एक नया मोड़ तब आया, जब एकाएक उसे अपनी पत्नी को छोड़कर युद्ध के मैदान में जाना पड़ा और वहां उसकी मुलाक़ात एक दूसरी औरत से हुई ।

क्या उसकी जिन्दगी में वह एक और प्यार की शुरूआत थी या फिर वह सिर्फ जिस्म का आकर्षण था ?

पढ़ें ‘‘अमित खान’’ की कलम से निकली एक बेहद शानदार इरोटिक लव स्टोरी ।

2

रात का निमंत्रण

हम एक खूबसूरत औरत की तरफ क्यों आकर्षित होते हैं, प्यार की वजह से या सेक्स की वजह से? मुझे लगता है, सेक्स की वजह से। पहले आकर्षण की वजह सेक्स ही है, प्यार तो फिर धीरे-धीरे जन्म लेता है।

प्यार कोई एकदम से होने वाली चीज नहीं है। प्यार वक्त लेता है। हाँ, सेक्स में जरूर गजब का चुम्बकीय आकर्षण है, जो एकदम से किसी को भी प्रभावित कर लेता है।

मेरा नाम उदयवीर सिंह है। मैं राजपूताना रेजीमेंट में लेफ्टिनेंट कर्नल हूँ।

एक फ़ौजी की सेक्स लाइफ सबसे ज्यादा नीरस होती है। शुरू से शिक्षा दी जाती है, देश के नागरिकों के लिए जीओ। देश की सुरक्षा के लिए जीओ। हमेशा अनुशासित रहो।

फ़ौजी का निजी जीवन तो जैसे कुछ होता ही नहीं। हमेशा पारिवारिक जीवन से दूर बॉर्डर पर मुस्तैद रहना पड़ता है।

लेकिन ऐसा नहीं है, फ़ौजी की इच्छाएं नहीं होतीं। फ़ौजी भी आखिर एक आम इंसान ही है। उसकी भी पारिवारिक जीवन की इच्छा होती है, प्यार और सेक्स की इच्छा होती है। बल्कि शायद एक फ़ौजी में यह सारी इच्छाएं और भी ज्यादा प्रगाढ़ होती हैं, क्योंकि वह अनुशासित जीवन जीते हुए इन सबसे बहुत दूर रहता है।

और ह्युमन सायकोलॉजी है, जिसको जिस चीज से दूर रखा जाए, उसके अन्दर उसी को पाने की इच्छा ज्यादा बलवती होती है।

मैं, उदयवीर सिंह भी ऐसा ही था।

एक कर्मठ और अनुशासित फ़ौजी का जीवन जीते हुए मेरे अन्दर प्यार की चाह किलौल मारने लगी थी।

मेरी उम्र तब 26 वर्ष थी, जब मेरी अंतरा से शादी हुई। अंतरा से हालांकि मेरी अरेंज मैरिज हुई थी, लेकिन प्रेम का पहला पाठ मैंने उसी के साथ पढ़ा। मैं अंतरा को पत्नी के रूप में पाकर धन्य हो गया था। कुछ लोग पहले प्यार करते हैं, फिर शादी करते हैं लेकिन मैंने पहले शादी की और फिर अपनी पत्नी से प्रेम किया।

यह आईडिया भी कमाल है, पत्नी से प्रेम। खोने का कुछ डर ही नहीं होता और जीवन तो जैसे बेहद सुखमय हो जाता है।

मैं शादी के दौरान एक महीने की छुट्टी पर था।

वह तेज सर्दियों के दिन थे।

सर्दियों की रातें वैसे भी बेहद दिलकश हुआ करती हैं और खासतौर पर अब उन ठिठुरती रातों में बंद अँधेरे कमरे के अन्दर गरमाई देने के लिए अंतरा जैसी ख़ूबसूरत पत्नी मेरे पास थी।

उफ़! वह रातें तो मानो स्वर्ग के समान हो गयी थीं।

और अंतरा भी क्या खूब लड़की थी। लम्बे-चौड़े, तीखे नैन-नक्श वाली एकदम गोरी चिट्टी राजपूत औरत। मैं दिन-रात अंतरा के प्यार में ही रहता। और अंतरा भी कुछ कम शरारती नहीं थी। वह बिस्तर पर ऐसी-ऐसी शरारतें करती कि मैं हंस-हंस कर पागल हो जाता।

हे भगवान! उस लड़की ने तो जैसे जादू कर दिया था मेरे ऊपर। यह कहना मुश्किल था कि मैं प्रेम में था या सेक्स के मोहपाश में। हाँ, इतना जरूर कहूंगा कि उसके जिस्म को पाने की चाहत में ही वह खेल शुरू हुआ और अब मैं उस लड़की से प्रेम भी करने लगा था। मैं एक पल के लिए उससे अलग होने की कल्पना करता, तो काँप उठता। वह मेरे नस-नस में खून की तरह घुल चुकी थी। उसने मुझे अपना दीवाना बना लिया था।

अंतरा, जो पहले मेरी पत्नी बनी और फिर प्रेमिका बन गयी।

बहुत कम लोगों को यह सौभाग्य हासिल होता है कि उनकी पत्नी उनकी प्रेमिका बन जाए। मैं उन खुशकिस्मत लोगों में से एक था।

क्या कभी आपने अपनी पत्नी से प्रेम किया है? सवाल सुनने में ही थोड़ा अजीब लगता है लेकिन सच है, बहुत कम लोग अपनी पत्नी से प्रेम करते हैं। अपनी पत्नी चाहे कितनी ही खूबसूरत क्यों न हो, लेकिन मर्दों की निगाह तो हमेशा दूसरे की औरत पर होती है। वह कुत्ते की तरह लार टपकाते दूसरी औरतों के आगे-पीछे घूमते हैं।

लेकिन जनाब, कभी अपनी पत्नी से प्रेम करके देखिये, जिन्दगी धन्य हो जायेगी। और अगर कहीं पत्नी को आपने अपनी प्रेमिका बना लिया, तो फिर कहना ही क्या?

फिलहाल मैं अंतरा के साथ ऐसा ही शानदार जीवन जी रहा था। अंतरा पत्नी से मेरी प्रेमिका जो बन चुकी थी।

लेकिन हर सुख के बाद दुःख आता है, वही मेरे साथ हुआ। मेरे दुःख की आधारशिला खुद मेरे फ़ौज के हेडक्वार्टर की तरफ से रखी गयी।

हेडक्वार्टर से मेरे पास फोन आया कि मेरे सारी छुट्टियाँ कैंसिल कर दी गयी थीं और मुझे फ़ौरन खड़े पाँव बॉर्डर पर तलब कर दिया गया था। बॉर्डर पर एकाएक फ़ौजी सरगर्मियां काफी बढ़ गयी थीं और डर था कि पाकिस्तान की तरफ से कभी भी हमला हो सकता है।

तौबा, वह ऑर्डर मेरे लिए फांसी के फरमान से कम नहीं था।

मुझे इतना जबरदस्त झटका लगा जैसे किसी ने मुझे आसमान से उठाकर जमीन पर पटक मारा हो।

अंतरा के बिना तो मैं अब एक सेकंड भी नहीं रह सकता था।

लेकिन मैं करता क्या? नौकरी भी तो करनी थी, मजबूरन मुझे ड्यूटी पर लौटना पड़ा।

मगर अंतरा से अलग होते हुए मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे कोई शरीर से आत्मा को अलग कर रहा हो।

अंतरा की आँखों में तो आंसू आ गए थे। वह मुझसे लिपट कर रो पड़ी।

हमने अलग होना था और हम हुए।

हेडक्वार्टर पहुंचते ही फ़ौरन मेरे पोस्टिंग बॉर्डर पर कर दी गयी थी। वहां पूरा युद्ध का एटमोसफेअर था। जगह-जगह बंकरें खोदी जा रही थीं। पूरी बटालियन के रहने की व्यवस्था नजदीक के ही एक गाँव में की गयी थी, ताकि दुश्मन को हमारी बढ़ी हुयी फ़ौजी गतिविधियों के बारे में एकाएक पता न चले।

हम सुबह-ही-सुबह अपने-अपने कैम्पों से बॉर्डर की तरफ निकल जाते और दिन भर बॉर्डर पर काम करने के बाद शाम ढले वापस अपने-अपने कैम्पों में लौटते।

दिन तो किसी तरह गुजर जाता था लेकिन जैसे ही रात होती, तो अंतरा की याद मुझे घेर लेती । मैं देर तक बिस्तर पर पड़ा करवटें बदलता रहता और सिर्फ अंतरा के बारे में सोचता।

सर्दियों की वह गुनगुनी रातें मेरे ऊपर कहर बनकर गुजरतीं। अंतरा की जरूरत मुझे इतनी शिद्दत से महसूस होती, जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।

यह मेरा अंतरा के प्रति अगाध प्रेम था या फिर उसके जिस्म को पाने की चाह, यह कहना मेरे लिए मुश्किल था।

फिर मेरी जिन्दगी में तूफ़ान आया।

तूफ़ान का नाम था- गहना।

गहना उसी गाँव की लम्बी-तगड़ी और ख़ूबसूरत औरत थी, जिस गाँव में हमारे कैम्प लगे हुए थे।

मैं जब शाम ढले थका-हारा बॉर्डर से गाँव की तरफ लौटता, तो ज्यादातर गहना मुझे म्युनिसपिल्टी के हैण्डपम्प के पास कपड़े धोती हुई दिखाई देती।

अपने साफ़-साफ़ सुथरे चेहरे पर वो हमेशा लाल रंग की बड़ी बिंदी लगाए रखती थी। हाथों में चूड़ियाँ भी भरे रहती, जो खूब खन-खन बोलतीं। साड़ी वह अपने घुटनों से ऊपर करके हैण्डपंप के पास बैठती थी, जिससे उसकी गोरी-गोरी केले के तने जैसी चिकनी रानें साफ़ दिखाई पड़ती थीं, जिन्हें देखते ही किसी भी मर्द का दिल डोल जाए। गजब की सम्मोहन शक्ति उसके शरीर में थी।

वह अक्सर मेरी तरफ से ऐसे अंदाज में मुस्कुराकर देखती कि मेरे शरीर में सनसनाहट दौड़ जाती।

फिर एक घटना घटी।

एक दिन मैं बॉर्डर से अपने कैम्प की तरफ लौट रहा था और अकेला था, तभी हैण्डपंप के नजदीक बैठी गहना की नटखट आवाज मेरे कानों में पड़ी- "क्या बात है फ़ौजी बाबू! आज लेट हो गए।" उसकी शरारती आँखें हमेशा की तरह जैसे बहुत कुछ कह रही थीं- "अगर कभी ज्यादा देर हो जाए, तो सीधे मेरे घर चले आना, वो सामने ही है।" उसने अपने घर की तरफ उंगली उठाई- "मेरे पति पास के कस्बे की लालटेन फैक्ट्री में काम करते हैं। और रोजाना नाइट ड्यूटी होती है उनकी। घर पर बस अकेली होती हूँ मैं।"

उफ़, वह तो जैसे रात का खुला निमंत्रण मुझे दे रही थी।

उस पूरी रात मैं सो न सका। बार-बार उस औरत का चेहरा मेरी आँखों के गिर्द घूम जाता। वो पहली रात थी, जब मैं अंतरा के बारे में नहीं बल्कि उस औरत के बारे में सोच रहा था।

मेरे कदम बहकने लगे थे।

मैं साफ़-साफ़ अपना संयम खो रहा था।

मेरी शारीरिक जरूरत मेरे साथ ऐसा कर रही थी या फिर वो प्यार था, नहीं-नहीं, प्यार तो वह किसी हालत में नहीं हो सकता। वह सिर्फ देह का आकर्षण था। सेक्स की चाह मुझे भटका रही थी।

उस रात कई और यक्ष प्रश्न मेरे मस्तिष्क में सर्प की तरह रेंग उठे। 'क्या जिस प्रकार अकेले में मुझे एक औरत की जरूरत महसूस हो रही थी, उसी प्रकार अंतरा को भी एक पुरुष की जरूरत महसूस हो रही होगी? और..और क्या उसका संयम भी इसी तरह छूट रहा होगा?'

नहीं, मैंने जल्दी से अपने विचारों पर अंकुश लगाया, ऐसा नहीं हो सकता।

मैं अब थोड़ा डर गया था।

उसके बाद मैं सो गया।

लेकिन दूसरी रात वह घटना घट ही गयी, जिसकी वजह से मैं डरा हुआ था।

दरअसल अगले दिन सुबह उठकर जब मैं बॉर्डर पर खोदी जा रही बंकरों की इंस्पेक्शन के लिए पहुंचा, तो मेरा किसी भी काम में कोई मन न था। मेरे दिल-दिमाग में तो वही औरत घूम रही थी। उसकी गोरी-गोरी रानें, बड़े मोहक अंदाज में मुस्कुराती आंखें और रात का निमंत्रण देते उसके शब्द।

उसकी बातें मेरे शरीर में लावा-सा भर रही थीं।

उस रोज शाम बड़ी मुश्किल से हुई।

फिर मैंने इंस्पेक्शन का नाटक करते हुए खुद को जानबूझकर थोड़ा लेट किया और फिर वापसी में सीधा उसके घर पहुँच गया।

हे भगवान! वह तो मानो पहले से ही मेरा इन्तजार कर रही थी। उसे जैसे मालूम था कि मैं उस रात आने वाला हूँ। वह पूरी तरह से तैयार बैठी थी।

"क्या बात है?" वह मुझे देखकर मुस्कुराई- "आज लेट हो गए थे?"

"ह..हाँ!" मेरी आवाज फंसी-फंसी थी।

वह हंसी।

उसकी आवाज में, उसकी हंसी में अजीब-सी शरारत घुली थी।

फिर उस रात जो हुआ, वह मैं कभी नहीं भूल सकता।

उस औरत के साथ सहवास करने का एक अलग ही आनंद था।

वह खूब खेली खाई थी और काम-क्रीडा का ऐसा ज्ञान रखती थी कि कामदेव भी उसके सामने नतमस्तक हो जाएँ।

उस रात मुझे पहली बार उसका नाम पता चला- गहना।

वह सिर्फ नाम की ही गहना नहीं थी बल्कि उस रात जब उसने मेरे सामने अपने कपड़े उतारे तो मुझे पता चला कि वह जिस्मानी तौर पर भी कुदरती गहनों से लदी थी।

शारीरिक सुख प्राप्त करने के बाद मैं उसके बाहुपाश में ही थककर गहरी नींद सो गया।

सुबह उसने ही मुझे झिझोड़कर उठाया और बताया कि उसके हसबैंड के फैक्ट्री से आने का वक्त हो गया है।

मैं आनन-फानन कपड़े पहनकर वहां से यूं नौ दो ग्यारह हुआ जैसे वहां आया ही नहीं था।

लेकिन उस रात मेरे अन्दर एक ग्लानि भाव भी समा गया था कि गहना के साथ ऐसे अंतरंग संबंध बनाकर मैं अपनी पत्नी के साथ धोखा कर रहा हूँ।

फिर मेरे मस्तिष्क में कल की तरह ही एक और यक्ष प्रश्न कौंधा- 'क्या अंतरा भी मेरे पीछे इसी तरह...?' आखिर शारीरिक जरूरत तो उसकी भी थी।

'नहीं!' फिर मैंने स्वयं ही जल्दी से उस विचार को काटा- 'अंतरा ऐसा नहीं करेगी।'

क्यों नहीं करेगी? इसका जवाब मेरे पास भी नहीं था। और मैं इस बारे में ज्यादा सोचना भी नहीं चाहता था। मैं उन मर्दों में से था, जो अय्याशी करने का राइट सिर्फ अपने पास रखते हैं। बीवियों को वह राइट हासिल नहीं होता।

यह सब सोचते हुए मैं यह भी भूल गया था कि जिस गहना के साथ मैं यह सब कर रहा था, वह भी आखिरकार किसी की पत्नी है।

मैं एक रात गहना के पास क्या गया, फिर तो रोजाना जाने लगा।

गहना मुझे तृप्त कर देती। गहना को भी मेरा साथ अच्छा लगता था।

फिर ऐसी घटनाएं भी घटीं, जब मुझे गहना को एकाएक आधी रात में बिस्तर पर अकेला छोड़कर वहां से भागना पड़ता। दरअसल कई बार उसका हसबैंड नाइट शिफ्ट से बीच में ही घर वापस लौट आता था। अच्छी बात यह थी कि डायरेक्ट घर में दाखिल होने की सहूलियत उसके पास नहीं थी। वह पहले बाहर से कुंडी बजाता और उसका कुंडी बजाना ही मेरे और गहना के लिए खतरे का सिग्नल होता। मैं फ़ौरन बिजली जैसी फुर्ती से कपड़े पहनता और आनन-फानन पीछे की खिड़की लांघकर वहां से भाग खड़ा होता।

रात में बजने वाली कुंडी की वह आवाज मुझे डरा डालती थी।

गहना के पास जाने से मेरी सेक्स की पूर्ति होने लगी थी, लेकिन प्यार की पूर्ति अभी बाकी थी। पहली बार मुझे प्यार और सेक्स के बीच का फर्क महसूस हुआ।

वह सिर्फ वासना का जुड़ाव था। अंतर्मन का जुड़ाव नहीं था। मेरे अंतर्मन में तो अभी भी अंतरा ही बसी थी।

फिर एक अच्छी घटना भी घटी। बॉर्डर पर युद्ध की आशंका के जो बादल मंडरा रहे थे, वह छंट गए। युद्ध नहीं हुआ और मेरी छुट्टियाँ वापस एप्रूव हो गईं।

मैं खुशी से भर उठा। अंतरा के पास जाने की मुझे जो खुशी थी, उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। गहना से छूटने का तो कोई दुःख ही नहीं था, क्योंकि अभी तक कोई जुड़ाव ही नहीं हुआ था उसके साथ।

मैंने फ़ौरन अपना सामान पैक किया और गाँव जा पहुंचा। अब बस मुझे रात का इंतजार था, जब अंतरा मेरी बाहों में होती। जितना मैं अंतरा को देखकर खुश हुआ था, उतनी ही अंतरा भी मुझे देखकर खुश हुई थी।

फिर वह रात भी आ पहुँची, जिसका मुझे बेसब्री से इंतज़ार था।

अंतरा मेरी बाहों में थी। निर्वस्त्र। और पूरे कमरे में घुप्प अन्धेरा था। फिर हम दोनों के बीच सेक्स का वही जाना-पहचाना खेल शुरू हुआ। हम दोनों ही बेहद उन्माद में थे। बेहद उत्तेजना से भरे हुए। फिर वह पल भी आया, जब हम उत्तेजना के चरम पर थे। जब मनुष्य को अपने होने तक का एहसास शून्य हो जाता है। जब हम कहाँ हैं और किसके साथ हैं, इस तक का आभास नहीं रहता।

उन्माद के उसी चरमोत्कर्ष के दौरान वह घटना घटी। एकाएक बाहर से किसी ने जोर से कुंडी खड़खड़ाई।

मैं घबरा उठा। उसी घबराहट में मेरे मुंह से आकस्मात निकला- "लगता है तुम्हारे पति आ गये।"

अंतरा ने उसी भावावेश में तुरंत मेरी पीठ के गिर्द अपनी बाहों का शिकंजा और कस लिया। फिर वह उसी उन्माद में बोली- "नहीं! नहीं! वह बॉर्डर पर गए हुए हैं।"

एकदम से हम दोनों के बीच सन्नाटा खिंच गया और हकीकत भांपते ही हमारे शरीर बर्फ की सिल्ली की तरह ठंडे पड़ते चले गए।

कहते हैं, सच्चाई कड़वी भी होती है और नंगी भी। अब वही सच्चाई हम दोनों के सामने थी, जिससे कोई भी मुंह नहीं छुपा सकता था।

रात का निमंत्रण, वह सिर्फ मैंने नहीं शायद अंतरा ने भी स्वीकार कर लिया था।

समाप्त

द लास्ट डे

ओंकार कपूर ने साची से लव मैरिज की थी और अब उसके वैदेही नाम की एक बड़ी प्यारी बेटी भी थी । सिर्फ एक ही दिन की बेहद रोमांच से भरी कहानी । उस दिन ओंकार कपूर को सुबह से ही लग रहा था कि उसके घर में किसी की तो मौत होने वाली है । वह दिन उसकी ज़िन्दगी का ज़बरदस्त घटनाओं से भरा दिन था ।
उस कहानी के अंत में जो हुआ, उसे पढ़कर आप भी चौंक जायेंगे ।
पढ़ें आजकल के प्यार को दर्शाती एक बेहद शानदार सुपरनेचुरल लव स्टोरी ।
“अमित खान” की कलम से निकली एक ताज़ातरीन कहानी ।

द लास्ट डे

सुना है, जब घर में किसी अपने की मौत होने वाली होती है, तो अजीब-सा लगने लगता है । एक शून्य सा उभरता है । कहीं मन ही नहीं लगता । भीड़ में होते हुए भी अकेलेपन का एहसास सताता है । जैसे कोई नहीं है हमारे आसपास ।

सेम ऐसी ही फीलिंग मेरी आजकल थी ।

जब पापा की डैथ हुई थी, तब भी मेरी यही सेम फीलिंग थी । एकदम अकेलापन, कोरे घड़े जैसा खालीपन महसूस करने लगा था ।

यानि फिर मेरे किसी अपने की डेथ होने वाली थी ।

वह बात सोचकर ही मेरी रूह काँप उठी ।

मौत से डरावना कुछ नहीं । घर में मातम का माहौल । एक बड़ी-सी जगह रखी हुई डेड बॉडी ! प्रलाप करते लोग ! रुदन की आवाजें ! सफ़ेद कफ़न ! उफ्फ ! उफ्फ !!

मैंने दहशत से आँखें बंद कर लीं ।

पता नहीं कौन मरने वाला था ?

सबसे पहले मैं आपको अपना इंट्रोडक्शन दे दूं, मेरा नाम ओंकार कपूर है । मैं मेडीसिन बनाने वाली एक बड़ी प्राइवेट कम्पनी में जॉब करता हूँ । पैकिंग डिपार्टमेंट का हैड हूँ । मुम्बई जैसे बड़े पॉश शहर में रहता हूँ । 50 हज़ार सेलरी है । सुनने में सेलरी बहुत लगती है, लेकिन मुम्बई जैसे शहर में पूरा नहीं पड़ता । 30 हज़ार तो फ्लैट की ई.एम.आई. ही चली जाती है । बचे 20 हज़ार में मुश्किल से महीना निकलता है । एक शादीशुदा आदमी की तकलीफ आप शायद बेहतर समझ सकते हैं । बशर्ते अगर आप भी शादीशुदा हैं तो ?

साची से मीठीबाई कॉलेज में ग्रेजुएशन के दौरान ही मुझे प्यार हो गया था । साची बड़ी आज़ाद ख्याल वाली, बड़ी फेमिनिज्म, जेंडर इक्वेलिटी और वीमेन एम्पावरमेंट की बात करने वाली लिबरल लड़की थी ।

"देखो, शादी तो मैं तुमसे नहीं करुँगी ।" साची साफ़-साफ़ कहती थी ।

"व्हाय ? प्यार नहीं करती मुझसे ?"

"अजीब आदमी हो । प्यार का शादी से क्या लेना-देना । जरूरी तो नहीं कि अगर प्यार करती हूँ, तो शादी भी तुमसे करूँ ?"

मैं हैरान हो उठा । प्यार की उसकी अपनी अद्भुत परिभाषा थी ।

"लुक डूड ! लव एंड मैरिज आर डिफ्रेंट थिंग्स !" साची बोली, "प्यार उससे किया जाता है, जो अच्छा लगे ।"

"एंड मैरीज ?"

"मैरिज उससे की जाती है, जो अच्छा रखे । जो फायनेंसली तौर पर स्ट्रांग हो । जो एक लड़की को लाइफ में सिक्योरिटी दे सके, कम्फर्ट दे सके । उसका सोशल लाइफ स्टेट्स मेंटेन रख सके । घोड़ा-गाड़ी, ज्वेलरी सब लेकर दे सके ।"

"और तुम मुझे इस काबिल नहीं समझतीं ?"

"नो ! नेवर !! समझती क्या नहीं, तुम हो ही नहीं इस काबिल । आई मीन डोंट फील बेड !" साची मुझे बड़े प्यार से बाहों में भरकर कहती, "यू आर माई लव बन्नी ! तुम तो बस आशिक मिजाज़ हो । मजनू टाइप । फुल रोमांटिक । बिस्तर पर शानदार, लच्छेदार बात करने वाले । सोशल स्टेट्स मेंटेन रखने वाले मर्द अलग ही होते हैं । वो बिजनिस टुडे, बिजनिस वर्ल्ड और फ़ोर्ब्स टाइप की मैगज़ीन पढ़ते हैं । तुम्हारी तरह हिंदी लिटरेचर नहीं पढ़ते घूमते ।"

"फिर ऐसे प्यार का क्या फायदा ?"

"क्यों नहीं है फायदा ? सारी ज़िन्दगी तुमसे प्यार करुँगी । बल्कि अगर हमने शादी की, तो शादी के फ़ौरन बाद हमारा प्यार मेरे हाथों की मेहंदी उतरने से पहले ख़त्म हो जायेगा । इधर सेक्स का भूत उतरा, उधर प्यार का द एंड । उसके बाद डेली की किट-किट शुरू । फिर किसी दिन या तो तुम सुसाइड कर लोगे या मैं कर लूँगी । लेकिन अगर ऐसे ही चला, तो सारी ज़िन्दगी प्यार चलेगा ।"

"शादी के बाद भी ?"

"यस ! ऑफकोर्स माई रोमियो ! तब तो और ज्यादा मज़ा है । छुप-छुपकर अफेयर करने से ज्यादा सेक्सी तो कुछ है ही नहीं ।"

"तुम्हारे हसबैंड से धोखा नहीं होगा यह ?"

"देखो, तुम यह मर्दों वाली चुतियापंती टाइप बातें मुझसे मत किया करो ।" साची एकदम से भड़क उठती, "तुम्हें तो लड़कियों के मुँह से गालियाँ सुनना भी पसंद नहीं है । यू आर रियली अ ममाज़ बॉय ! सिर्फ प्यार मम्मी से पूछकर नहीं करते । अरे हसबैंड से काहें का धोखा भई ! इट्स अ फ्री सोसाइटी ! आज की डेट में कोई लड़की वर्जिन नहीं है । और मेरा हसबैंड ही कौन-सा ब्रह्मचारी होगा, जो मेरे साथ ही उसकी वर्जेनिटी टूटेगी ? पता नहीं किस दुनिया के होते हैं तुम्हारे जैसे मर्द ? डोंट साउंड सो बैकवर्ड !"

उसका गुस्सा सातवें आसमान पर था ।

जबकि मैं हतप्रभ-सा उसके रिबेलियस थॉट सुन रहा था ।

"लड़की की आँख के आँसू किसी को नहीं दिखते ।" साची गुस्से में ही आगे बोली, " लेकिन वर्जेनिटी की खून की एक बूँद से मर्द लड़कियों का चरित्र जान लेते हैं । केरेक्टर जान लेते हैं । अपनी वर्जेनिटी का मर्दों को पता नहीं होता, कितनी बार ढक्कन खुल चुका

होता है । कितनी सील तोड़ चुके होते हैं । सब मर्द कुत्ते की नस्ल से हैं, रोड पर आती-जाती कोई भी खूबसूरत लड़की दिखाई दे जाये, लार घुटनों-घुटनों तक टपकने लगती है ।"

"यानि शादी के बाद भी तुम मुझे अपनी कीप, रखैल बनाकर रखोगी ?"

"वेल सेड !" साची हँस पड़ी, "फायनली कुछ तो मेरी कंपनी का तुम्हारे ऊपर असर हुआ । कुछ तो जेंडर इक्वेलिटी की बात की तुमने । अभी तक औरतें ही कीप बनती थीं । अब मर्द भी रखैल बनेंगे । एक बात कहूँ, तुम्हारे इसी सेंस ऑफ़ ह्यूमर ने ऑलवेज मुझे तुम्हारे प्रति अट्रेक्ट किया है । और बाकायदा पेमेंट भी किया करुँगी तुम्हें । देखो डियर, पैसे से प्यार नहीं खरीदा जा सकता, पर किराये पर जरूर लिया जा सकता है ।"

मेरे समझ ही नहीं आता था कि मैं उसकी बात सुनकर हंसू या रोऊँ ?

साची जरुरत से ज्यादा प्रेक्टिकल थी । मैं ही नहीं था । जिद पकड़ ली, शादी करूँगा तो तुमसे । ऐसी लड़की को मैं हर्गिज छोड़ना नहीं चाहता था ।

मजबूरन वो भी मान गयी । प्यार जो करती थी ।

हो गयी शादी ।

आज हमारी शादी को 3 साल हो चुके हैं ।

हमारे 2 साल की एक बेटी भी है, वैदेही ! बड़ी प्यारी बच्ची है, एकदम माँ पर गयी है । आज सोचता हूँ, अच्छा ही हुआ जो मेरे ऊपर नहीं गयी ।

वही हुआ, जो साची कहती थी । शादी के बाद डेली की किट-किट शुरू हो गयी । सेक्स का भूत तो शादी से पहले ही उतर चुका था । शादी के बाद पहले जॉब आसानी से नहीं मिली । फिर फ्लैट ले लिया और उसकी ई.एम.आई. का झमेला शुरू हो गया ।

ऑफिस से निकलते हुए घर पहुँचने में अक्सर लेट हो जाता था ।

कार अफोर्ड नहीं कर सकता था, फिर भी साची की वजह से वो फंदा भी गले में बाँध लिया । आई-टेन कार खरीद ली । उस पर भी डेली की झिक-झिक होती थी ।

"यह भी कोई कार है ? बी.एम.डब्लू. या मर्सेडीज़ नहीं तो कम-से-कम इनोवा तो ली होती । आई-टेन में जाते हैं, तो सोसाइटी में इन्सल्ट और होती है ।"

हमारे बीच झगड़े इस कदर बढ़ गये कि साची दो बार सुसाइड की भी कौशिश कर चुकी थी । वह तो मैं घर समय पर पहुँच गया और उसे बचाया ।

अब आते हैं घटना वाले दिन पर । जिस दिन घटना घटी और जिस दिन मुझे सुबह से ही किसी बड़ी अनहोनी की आशंका सता रही थी । लग रहा था, जैसे किसी अपने की मृत्यु होने वाली है ।

वह बड़ा संकट से भरा दिन था ।

उस दिन बड़ी अजीब-अजीब घटनायें मेरे साथ घटी । आगे आप भी उन घटनाओं को सुनेंगे, तो हैरान होंगे ।

सबसे बड़ी बात यह है कि उस दिन वैदेही का बर्थडे भी था ।

सुबह से ही साची मुझे बार-बार फोन कर रही थी, "आज जल्दी आना । घर पर पहले तीनों मिलकर केक काटेंगे और फिर कहीं बाहर घूमने चलेंगे । डिनर भी बाहर ही करेंगे । यहाँ सोसाइटी में तो कोई ऐसा अपना है नहीं, जिसके साथ सेलीब्रेट किया जा सके । सब अपने में ही मग्न रहते हैं ।"

लेकिन मैं ऑफिस से निकलने में हमेशा की तरह उस दिन फिर लेट हो गया था । मैं क्योंकि पैकिंग डिपार्टमेंट में था, इसलिये अक्सर लेट होता था । डिलीवरी में हमेशा एंड टाइम पर कुछ-न-कुछ प्रॉब्लम होती । कभी टेम्पो वाला लेट होता । कभी पैकिंग ही चल रही होती । मैं क्योंकि हैड था, इसलिये सारी ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर थी । मुझे डिलीवरी चालान पर सिग्नेचर करके ही ऑफिस छोडना होता था ।

किसी तरह काम निपटाकर मैं ऑफिस से अपनी आई-टेन कार में बैठकर घर की तरफ भागा । मेरी निगाह अपने मोबाइल फोन की तरफ गयी, उस पर साची की 32 मिस्ड कॉल थीं ।

तौबा !

आज खैर नहीं थी मेरी ।

कार को रोड पर तूफानी अंदाज़ में भगाते हुए मेरी निगाह व्हाट्सअप पर भी पड़ी, उस पर साची ने मुझे रेड-रेड फेस वाले कई सारे एंग्री इमोजी भेजे हुए थे ।

मेरे फोन न उठाने की वजह से शायद वो नाराज़ थी ।

मैंने कार ड्राइव करते हुए साची को फोन लगाया । दूसरी तरफ रिंग बजने लगी, लेकिन साची ने फोन नहीं उठाया ।

मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा ।

कुछ तो गड़बड़ थी ।

कहीं साची ने आज फिर सुसाइड ?

नहीं-नहीं । मैंने जल्दी से उस विचार को अपने दिमाग से झटका ।

वैसे ही मेरे मन में सुबह से भयानक-भयानक बातें आ रही थीं । एक तो वैदेही का बर्थडे था, फिर मैं आज लेट भी कुछ ज्यादा ही हो गया था ।

परिवार में किसी और की मौत हो, उससे अच्छा तो यह था, मैं ही मर जाऊं । सारी झंझट की वजह ही मैं था । मैंने बेहद गुस्से में अपने आपको आठ-दस गालियाँ बकीं ।

उफ्फ !

रास्ते में आज ट्रेफिक भी कमाल था ।

मुम्बई के ट्रेफिक से तो आप वाकिफ ही हैं । फिर मैं एस.वी. रोड पर था । पूरा एस.वी. रोड जैसे फुल जेम पेकड था ।

मैंने फिर साची को फ़ोन लगाया । रिंग बजती रही, फोन किसी ने नहीं उठाया ।

मेरा दिल आज बहुत घबरा रहा था । मुझे लगने लगा था, कोई बुरी घड़ी आ चुकी है ।

मैं जब अपनी सोसाइटी की लॉबी में भागते हुए एंटर हुआ, तब रात के सवा बारह बज चुके थे । बर्थडे का पूरा प्लान तबाह हो चुका था ।

लिफ्ट के पास पहुँचकर मैंने बटन पुश किया । लिफ्ट उस समय फिफ्टीन फ्लोर पर थी, जबकि मेरा फ्लैट सेवन फ्लोर पर था । मेरे बटन पुश करने के बावजूद लिफ्ट फिफ्टीन फ्लोर पर ही अटकी रही ।

माई गॉड !

लिफ्ट ने भी आज ही ख़राब होना था ।

मैं बिना कोई सैकंड गवाएं सीढियों से अपने फ्लैट की तरफ भागा । मेरे पैरों को जैसे पंख लग गये थे । आप उस समय की मेरी मन:स्थिति का अंदाज़ा नहीं लगा सकते ।

जल्द ही मैं अपने फ्लैट के सामने था ।

मैंने अब डोरबेल बजाई ।

घर का दरवाज़ा भी न खुला ।

अब तो शक-शुबह की जैसे कोई आशंका ही न बची । जरूर साची ने गुस्से में आज फिर सुसाइड करने की कौशिश की थी । क्या आज साची ने अपने साथ-साथ वैदेही को भी ?

नहीं !

मुझे जैसे चक्कर आने लगे ।

अगले ही पल मैं फ्लैट के अन्दर था ।

और फ्लैट के अन्दर का जो द्रश्य मैंने देखा, उसे देखकर तो मैं चीख ही पड़ा । केक दूर फर्श पर पड़ा था, जिसे शायद साची ने बेहद गुस्से में पटककर मारा था । मैंने साची और वैदेही को देखा, वह दोनों बिस्तर पर बेसुध पड़े थे ।

साची का फोन साइलेंट पर था । शायद गुस्से में ही उसने अपना फोन साइलेंट पर डाल दिया था ।

“साची-साची !!” मैं चीख उठा ।

लेकिन मेरी चीखों से न साची की आँख खुली और न वैदेही उठी ।

मैंने दोनों को पकड़कर झंझोड़ा, कोई न उठा ।

मैं रो पड़ा ।

फूट-फूटकर रो पड़ा ।

अनहोनी हो गयी थी । दोनों मुझे हमेशा-हमेशा के लिये छोड़कर जा चुके थे ।

मैं पागलों की तरह प्रलाप करता हुआ फ्लैट से बाहर निकला । ऐसा लगता था, जैसे पूरे फ्लोर पर उस समय कोई न था ।

ऐसा सन्नाटा मैंने पहले कभी नहीं देखा था ।

वो मौत का सन्नाटा था ।

मैंने नीचे जाने के लिये, किसी को बुलाने के लिये फिर लिफ्ट का बटन पुश किया । लिफ्ट अभी भी फिफ्टीन फ्लोर पर ही अटकी थी ।

मैं फिर पागलों की तरह चीखता हुआ सीढियों से नीचे की तरफ भागा ।

मैं जैसे ही सोसाइटी से बाहर निकला, तभी मैंने जोर-जोर से सायरन बजाती एक एम्बुलेंस को वहाँ से जाते देखा ।

"हेल्प ! हेल्प !!" मैंने जोर-जोर से चिल्लाते हुए हाथ देकर उस एम्बुलेंस को रुकने का इशारा किया ।

एम्बुलेंस भी न रुकी ।

मैं पागलों की तरह एम्बुलेंस के पीछे भागा । वह एम्बुलेंस पता नहीं कहाँ जा रही थी ?

थोड़ी दूर जाकर वह एम्बुलेंस एक जगह रुक गयी ।

मैंने देखा, आगे बहुत भीड़ थी । शायद कोई बड़ा रोड एक्सीडेंट हो गया था ।

एम्बुलेंस रुकते ही भीड़ काई की तरह फटी ।

माई गॉड !

अगले पल मैं भौचंक्का रह गया ।

स्तब्ध !

हैरान !!

सामने मेरी आई-टेन खड़ी थी और मेरी कार का डिवाईडर से टकराकर बड़ा भीषण एक्सीडेंट हो गया था ।

तभी मेरी आँखें और भी ज्यादा फटी । कार की ड्राइविंग सीट पर मेरी डेड बॉडी पड़ी थी और वो खून से बुरी तरह लथपथ थी । स्टेयरिंग व्हील से सर टकराने की वजह से मेरा सर फट गया था ।

मैंने दहशत से कभी अपने आपको देखा और कभी अपनी डेड बॉडी को ।

सच क्या था ?

क्या मैं सच में मर गया था ?

हे भगवान ! मैं मर चुका था और मुझे पता ही नहीं था ।

मैं इस समय सिर्फ एक आत्मा था ।

एकाएक पूरा घटनाक्रम मेरे सामने घूम गया ।

एक्सीडेंट के बाद बहुत गरमा-गरमी में मेरी आत्मा अपना शरीर कार में ही छोड़कर अपनी सोसाइटी की तरफ भाग खड़ी हुई थी, क्योंकि मुझे साची और वैदेही के पास पहुँचने की जल्दी थी ।

मैं आत्मा था, इसलिये मुझसे लिफ्ट का बटन पुश नहीं हुआ था । लिफ्ट खराब नहीं थी । आत्मा बटन पुश ही नहीं कर सकती थी ।

इसीलिये मुझसे घर की डोरबेल भी नहीं बजी ।

उसी प्रवाह में, मैं बहुत स्पीड से घर में भी घुस गया, क्योंकि एक आत्मा को घर में एंटर होने के लिये किसी खिड़की-दरवाज़े की जरुरत ही नहीं होती ।

इसीलिये मेरे चिल्लाने की आवाजें भी साची और वैदेही ने न सुनी । वह दोनों तो बहुत थक-हारकर गुस्से में बस सोई पड़ी थीं और मैं समझ रहा था कि वह दोनों मर गयीं । जबकि मरा मैं खुद था । एक मरे हुए आदमी के चिल्लाने की आवाज़ वह भला कैसे सुनतीं ?

इसीलिये किसी पड़ोसी ने भी मेरे चिल्लाने की आवाजें नहीं सुनीं ।

फिर एम्बुलेंस ड्राईवर भी मुझे कैसे देखता और मेरे चिल्लाने से भला कैसे एम्बुलेंस रोकता ? वह तो खुद मेरी ही डेड बॉडी उठाने घटनास्थल पर जा रहा था ।

मैं रो पड़ा । जिंदा हो या मृत, दर्द का अहसास सबका एक जैसा होता है ।

तभी मैंने सामने से साची को भी भागकर आते हुए देखा । वह गोद में वैदेही को उठाये हुए थी ।

साची कार में मेरी डेड बॉडी देखते ही ह्रदयविदारक अंदाज़ में रो पड़ी । प्रलाप कर उठी ।

काश मैंने साची की बात मानी होती ?

काश हम दोनों ने शादी नहीं की होती ?

सही कहती थी साची । जरुरी नहीं कि जिससे आप प्यार करें, वही आपका अच्छा जीवन साथी भी साबित हो ।

साची की बातें मेरे कानों में गूँज उठीं- "अजीब आदमी हो । प्यार का शादी से क्या लेना-देना । जरूरी तो नहीं कि अगर प्यार करती हूँ, तो शादी भी तुमसे करूँ ? लुक डूड ! लव एंड मैरिज आर डिफ्रेंट थिंग्स ! प्यार उससे किया जाता है, जो अच्छा लगे ।"

"एंड मैरीज ?"

"मैरिज उससे की जाती है, जो अच्छा रखे । जो फायनेंसली तौर पर स्ट्रांग हो । जो एक लड़की को लाइफ में सिक्योरिटी दे सके, कम्फर्ट दे सके । उसका सोशल लाइफ स्टेट्स मेंटेन रख सके ।"

सही कहती थी साची ।

मैं ही नहीं समझ पाया था कि मैं उस जैसी अडवांस, फेमिनिस्ट और जेंडर इक्वेलिटी की बात करने वाली उस मॉडर्न लड़की का योग्य वर नहीं था । हम दोनों डिफ्रेंट प्लेनेट से थे । कभी मिल ही नहीं सकते थे ।

एकाएक मैं शांत हो गया । मैं समझ गया, साची एजुकेटेड थी, प्रेक्टिकल थी । वह मेरे बिना ज्यादा बेहतर ज़िन्दगी गुजार लेगी ।

वैदेही को भी वह शायद ज्यादा बेहतर परवरिश देगी ।

साची के रुदन की आवाजें निरंतर मेरे कानों में गूँज रही थीं, जिसमें अब वैदेही का रुदन भी शामिल हो गया था ।

शायद हमारे प्यार का यही अंत होना था ।

समाप्त